शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

अमृतलाल नागर के उपन्यास साहित्य की पृष्ठभूमि और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डा० मीनाक्षी देवी*
प्रवक्ता
हिन्दी विभाग
एम. जी. मेमोरियल डिग्री कॉलेज
ढिकौली, बागपत

अमृतलाल नागर बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। उन्होंने उपन्यास कहानी, रेखाचित्र और संस्मरण अनुवाद आदि विधाओं में लेखन कार्य करके अपनी उर्वर प्रतिभा और विलक्षण कृतित्व का परिचय दिया अमृतलाल नागर मूलतः उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध है। उनके उपन्यासों में ही उनकी सारी शक्ति के दर्शन होते हैं। अमृतलाल नागर ने अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक और वैचारिक पृष्ठभूमि को आत्मसात करके अपनी कृतियों में प्रतिबिम्बित किया। अंग्रेजी शासन के स्वायत और अत्याचारों की प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय जनमानस, में विद्रोह की चेतना जाग्रत हुई। फलतः देश के विभिन्न वर्गों ने संगठित होकर सन् 1857 ई० का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ा। अनेक देश भक्तों ने अपने प्राणों की बलि दी। 28 दिसम्बर 1885 ई० को कांग्रेस का जन्म हुआ ताकि भारतीय जनता और शासन के मध्य सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो सके, किन्तु कांग्रेस की स्थापना के साथ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। अंग्रेजों ने भारत में अपनी नीतियों के समर्थन के लिये सामन्तों जमीदारों को प्रोत्साहन दिया। अंग्रेज हर प्रकार से भारत की जनता का शोषण कर धन हड़पना चाहते थे। अंग्रेजों की कूटनीतियों और नौकरशाही नीतियों के कारण कांग्रेस में उदार और अनुदार दो दल बन गये थे। उग्र दल के नेताओं में अंग्रेजों के आश्वसनों पर विश्वास न कर पूर्ण स्वतन्त्रता को कांग्रेस का लक्ष्य बनाया। स्वर्गीय तिलक कांग्रेस के उग्र नेता थे उन्होंने स्वराज्य को अपना जन्मसिद्ध अधिकार बताते हुए कहा हम स्वयं अपने भाग्य के विधाता है। 'अमृत और विष' में नागरजी ने आजादी के पहले त्याग संगठन और सत्ता स्वार्थ व विघटन को स्पष्ट करते हुये कहा था, ''सन् 42 में हम लोग जेल क्या गये कि साहस संगठन और कर्मशूरता ही अंग्रेजी के पहले भारत छोड़ों नारे को मानकर चली

गयी। आजादी के बाद आया फूट असंगठन, विलास व्याभिचार, लूट, डाके, खून और काले बाजार का जमाना। नागरजी ने जनता की समस्याओं को समझा है और उसका कारण राजनीति अव्यवस्था को बतलाया है। समाज पर राजनीति हावी को हो रही है। वनकन्या को भी राजनीति से सख्त नफरत है। चाहे कोई भी दल हो सभी अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते है। ''जनता फुटबाल है मैंच उसी के नाम पर हो रहा है। पालिटिकल पार्टियों के खिलाड़ी ठोकरें उसी को लगा रहे है। ये इलेक्शन हमारी राजनीतिक समाज, व्यवस्था का सही रूप दरसा रहे हैं। नागरजी ने 19 वीं, 20 वीं सदी के स्वतन्त्रतापूर्व भारत की विशाल पृष्ठभूमि में राजनीति, शासन सत्ता और विघटित प्रजातान्त्रिक मूल्यों का सजग दृष्टि से अपने साहित्य में विशेषतः उपन्यासों में अंकित किया हैं। इन सभी राजनीतिक स्थितियों से उभरी मनौवैज्ञानिकता के विश्लेषण से भी नागरजी चूके नहीं है। इस मनोवैज्ञानिक पक्ष को उद्घाटित करते हुये नागर जी ने यह भी बताया है कि रूढ़िग्रस्त अथवा भ्रष्ट राजनीति से जकड़े समाज और जीवन को केवल देश से प्रेम करने वाले सकारात्मक सोच रखने वाले बुद्धिजीवी ही रास्ता दिखा सकते हैं।

साहित्यकार समाज में रहकर ही अनुभूतियाँ ग्रहण करता है। साहित्यकार होने से पहले वह एक व्यक्ति है। उन्होंने सामाजिक यथार्थ के सूक्ष्म तन्तुओं से ही अपने साहित्य का ताना–बाना बुना है। अंग्रेजों के शासनकाल में नवाबी, सामन्ती और जमीदार वर्ग के ऐश्वर्यविलास और प्रजा के शोषण पर उनका बोलबाला था शतरंज के मोहरे उपन्यास में वे लिखते हैं, ''अवध का बादशाह हर अमला नाजिम, ताल्लकेदार राजा, नवाब कौन लुटेरा नहीं है? सबसे बड़े लुटेरे ये अंग्रेज आये हैं। लूट दुनिया का धरम है।''[3] अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार भी हुआ। सामाजिक परम्पराओं में संस्कारों के विविध आडम्बर देखने को मिलते हैं। समय के उस दौर में संयुक्त परिवार, तयशुदा शादियाँ, बालविवाह, स्त्रियों की शिक्षा का प्रसार, पर्दे की प्रथा का बहिष्कार, दो विरोधी विचार धाराओं से जूझ रहे थे। ''ये मस्जिदें, मन्दिर और गिरिजाधर वगैरह पब्लिक प्लेसेज में आज के जमाने में नहीं बनवाने चाहिये पुराने जमाने ही बात और थी आज के जमाने में तो इन जगहों में खुदा के बजाय शैतान रहता है।''[4] इन समस्याओं के परिणामस्वरूव साम्प्रदायिकता, शोषण, धार्मिक पाखंड, पारिवारिक रिश्तों का विघटन, अनैतिक व्यवहार, मानसिक दवाबों को बल मिलता है और वर्ग संघर्ष उत्पन्न होता है। हिन्दी उपन्यासों में समाज के भीतर व्याप्त विषमताओं को खोजकर सामाजिक आर्थिक परिवर्तन को नवीन सम्भावनाओं की अभिव्यक्ति मिली है। नागरजी ने वेश्याओं स्थितियों और वेश्याउन्मूलन के बाद उनकी दशाओं का चित्रण भी सामाजिक परिप्रेक्ष्य में किया है। नागरजी ने ये 'कोठैवालियाँ' उपन्यास में वेश्याओं के इतिहास और उनकी स्थितियों का चित्रण किया ह। नागर जी ने भारतीय समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, कुरीतियों एवं रूढ़िजनित विकृतियों का यथार्थ चित्रण करके समाज के ह्रासात्मक मूल्यों के परोक्ष परिणामों का पर्दाफाश किया है। नागरजी ने सामाजिक पृष्ठभूमि में पनपी मनोविज्ञानिकता को भी प्रतिबिम्बित किया है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा अनेकानेक परिवर्तनों, विदेशी आक्रमणों विदेशी संस्कृतियों के मिश्रण के बावजूद मूल रूप में आदर्शों एवं गुणों की ही पोषक है। भारतीय समाज के जनमानस में लोकगीत सामान्य जीवन की अनुभूतियों के प्रतिबिम्ब है। लोकगीतों में साधारण मनुष्य मात्र मनोरंजन देखता है। जबकि नागरजी की कला दृष्टि उनमें सांस्कृतिक आधार ढूँढती है। महिपाल का यह कथन रेखांकित करने योग्य है, ''सामाजिक क्रान्ति लाने वालों को पहले अपनी परम्पराओं का संग्रह तो कर लेना चाहिये फिर उन्हें समझकर उनके अच्छे बुरे पन को छाँटना होगा।''[5] नागर जी का उपन्यास 'सुहाग का नुपूर' सामाजिक समस्या से गुँथा होने भी सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पर आधारित है। मानव के अन्तर्मन का मंथन ही सबसे बड़ी कलात्मक अभिरूचि है। ''अनुभूति चाहे अभाव की हो या भाव की चरम स्थिति छूते ही लेखक को सृजनात्मक स्फुरण मिल जाता है, सुख और दुःख दोनों ही स्थितियाँ अपने चरम बिन्दु पर पहुँच कर उसे अपने लिये चुनौती–सी लगने लगती है।''[6] नागर जी का उपन्यास साहित्य भारतीय संस्कृति की उदान्त पीठिका पर अवस्थित है।

नागरजी का साहित्य बीसवीं सदी के भारतीय समाज के जीवन स्तर का लेखा – जोखा प्रस्तुत करता है। ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय समाज में धनधान्य की कभी कमी न थी। विदेशी आक्रमणों और लूटमार के बावजूद मुगलकाल में भारतीय सम्पदा पर्याप्त थी। भारत में व्यापार के लिये अंग्रेजों ने यहाँ की समृद्धि देखी और भारतीयों के पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष और विलासिता से लाभ उठाकर शासन तन्त्र हथिया लिया। अंग्रेजों की शोषणवृत्ति से भारत की अर्थव्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गयी। अंग्रेजों ने ही लगान वसूली के लिये जमीदारी प्रथा को आरम्भ किया। सरकारी षड़यन्त्र और भ्रष्टाचार का बोलबाला स्वतन्त्रा संघर्ष के साथ–साथ भारत में बढ़ने लगा। महाकाल में नागरजी ने लिखा है, रईसों और अफसरों की दुनिया में क्या हम इन्सानों को काई इन्सान मानेगा? वे उन्हें भूत कहेंगे, भूत। हालाँकि वे खुद मुर्दा इन्सानियत के भूत बनकर हमारे सिरों पर सवार हैं। हमारी भूख की नींव पर उन्होंने अपनी सोने की हवेलियां बनवाई हैं।''[7] स्वतन्त्रता के साथ नेताओं की शासन व्यवस्था और स्वार्थी वृत्तियों के कारण जन–जीवन को आर्थिक संकटों से जूझना पड़ रहा है। सरकारी नीतियाँ देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिये बनायी गयी किन्तु कालाधन, मुनाफाखोरी आज भारतीयों के संस्कारों में रच बस गये हैं। यही कारण है कि लखपति करोड़पति बन रहे हैं किन्तु निर्धन और अधिक निर्धन होते जा रहे हैं। परिवर्तन सभ्यता और बढ़ती आवश्यकताओं ने आर्थिक संकट को गहराया है 'बूंद और समुद्र' का महिपाल सामाजिक रूढ़ियों और महत्वकांक्षाओं से त्रस्त होकर आर्थिक अभावों को दूर करने के लिये चोरी करता है और चोरी खुलने पर आत्महत्या कर लेता है। अर्थ–संघर्ष की स्थिति के निराकरण हेतु बूंद और समुद्र के बाबा मन्तव्य प्रकट करते हुये कहते हैं कि ''शहर और गांव के निर्धन व्यक्तियों को धन मिलना चाहिये। समाज में आर्थिक समानता लाना आवश्यक होगा।''[8] वैज्ञानिक साधनों की कमी, वर्षा की निर्भरता आय की सीमितता, किसानों में अन्य उद्योगों के प्रति उदासीनता, लघु उद्योगों का अभाव आदि के कारण यह संकट

मनुष्य को परेशान किये हुये हैं यही कारण है कि सरकार द्वारा बार–बार महँगाई भत्ता और वेतन वृद्धि करते रहने पर भी जीवन अधिक कठिन होता जा रहा है। नागरजी ने स्पष्टतः स्थापित किया है कि आज भारत जिस आर्थिक संकट से गुजर रहा है उसका आरम्भ अंग्रेजी शासन की दुनीतियों के साथ ही हो गया था। नागरजी ने बहुमुखी होकर समाज और व्यक्ति की पीड़ा को समझा है। विश्व के परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति को परखा भी है उनके उपन्यासों में आर्थिक पृष्ठभूमि काफी सुदृढ़ है उसमें पूर्ण यथार्थता के विविध रंग चित्रित हैं। उल्लेख्य है कि उन्होंने युग की प्रत्येक स्थिति को मानव मन की कसौटी पर कसकर उनकी मनौवैज्ञानिकता को भी रेखांकित किया है। उनमें बहुमुखी मानवीय समस्यायें अपने ही जीवन का प्रतिबिम्ब बनकर चित्रित हुई हैं। उनकी समाजवादी दृष्टि आस्था और आत्मविश्वास के साथ क्रियात्मक रूप में समस्याओं का समाधान खोजती है। उनके सभी पात्र संघर्षशील स्थितियों से गुजर कर ही जीवन का मूल्य समझ पाते हैं। अन्ततः कर्म में ही जीवन की सार्थकता समझते हैं।

सन्दर्भ सूची

1 *अमृत और विष, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 119*
2 *बूंद और समुद्र अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 128*
3 *शतरंज के मोहरे, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 250*
4 *अमृत और विष, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 526*
5 *बूंद और समुद्र अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 415*
6 *अमृत और विष, अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 395*
7 *महाकालए अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 68*
8 *बूंद और समुद्र अमृतलाल नागर, पृष्ठ संख्या 344*